महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर-273007 (उ.प्र.)

सेवा पथ

मासिक ई-पत्रिका

- वर्ष-2
- अंक-10
- जून, 2024

प्रकाशक

राष्ट्रीय सेवा योजना एवं राष्ट्रीय कैडेट कोर

- University Email-mguniversitygkp@mgug.ac.in
- NSS Email-coordinator.nss@mgug.ac.in
- University Website-www.mgug.ac.in
- NCC Email-ncc@mgug.ac.in

Arogya Dham, Balapar Road, Sonbarsa, Gorakhpur-273007 (U.P.) | coordinator.nss@mgug.ac.in | www.mgug.ac.in

सम्पादक

डॉ. अखिलेश कुमार दूबे

सहायक आचार्य (सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय)

कार्यक्रम समन्वयक, राष्ट्रीय सेवा योजना

सह सम्पादक

डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव

सहायक आचार्य (सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय)

एसोसिएट एनसीसी ऑफिसर

ग्राफिक्स एवं डिजाइन

श्री शारदानन्द पाण्डेय

राष्ट्रीय सेवा योजना

विश्वविद्यालय संगठन

कुलपति : मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेई

कुलसचिव : डॉ. प्रदीप कुमार राव

कार्यक्रम समन्वयक : डॉ. अखिलेश कुमार दूबे

इकाई सं0	इकाई कोड	इकाई का नाम	कार्यक्रम अधिकारी का
1	UP-80/001/24/001	पारिजात इकाई	डॉ. आयुस कुमार पाठक
2	UP-80/002/24/101	अष्ठवक्र इकाई	श्री साध्वीनन्दन पाण्डेय
3	UP-80/003/24/201	आर्यभट्ट इकाई	श्री धनन्जय पाण्डेय
4	UP-80/004/24/301	माता सबरी इकाई	श्री अभिषेक कुमार सिंह
5	UP-80/005/24/401	नचिकेता इकाई	कु. अभिनव सिंह राठोर
6	UP-80/006/24/501	माता अनुसुईया इकाई	सुश्री सुमन यादव
7	UP-80/007/24/601	गार्गी इकाई	सुश्री कविता साहनी
8	UP-80/008/24/701	मैत्रेयी इकाई	

राष्ट्रीय कैडेट कोर

101 यू.पी. एन.सी.सी. बटालियन, गोरखपुर

एसोसिएट एनसीसी ऑफिसर : डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव

'सेवा पथ'

'सेवा पथ' एक मासिक ई–पत्रिका है, जिसका प्रकाशन महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में संचालित **'राष्ट्रीय सेवा योजना'** एवं **'राष्ट्रीय कैडट कोर'** के द्वारा विश्वविद्यालय परिसर एवं विश्वविद्यालय के बाहर दिए जा रहे योगदान, सामाजिक सेवा, समाज के उत्थान हेतु किए जा रहे कार्यों इत्यादि का संकलन किया गया है। **'सेवा पथ'** मासिक ई–पत्रिका का **प्रथम संस्करण** माह **अगस्त 2023** में प्रकाशित किया गया था, जिसमें केवल **'राष्ट्रीय सेवा योजना'** द्वारा किए गए सामाजिक कार्यो एवं क्रियाकलापों को संकलन किया गया था। किन्तु आगे की कड़ी में बढ़ते हुए इस माह की मासिक ई–पात्रिक के **'चतुर्थ संस्करण'** में राष्ट्रीय सेवा योजना के साथ–साथ राष्ट्रीय कैडट कोर की इकाई के द्वारा किए जा रहे गतिविधियों को भी शामिल किया जा रहा है।

इस मासिक ई–पत्रिका का नाम **'सेवा पथ'** शब्द सामाजिक सेवा और सामाजिक उत्कृष्टता की प्रवृत्ति की ओर केन्द्रित है। यह एक व्यक्ति या समूह का उद्दीपन करता है जो समाज में सेवा करने के लिए समर्पित है। **'सेवा पथ'** का आशय है कि व्यक्ति या समूह अपने कौशल, समर्पण की भावना से समाज की सेवा करें व दूसरों को भी सेवा करने के लिए उद्दीपित करता रहे। व्यक्ति या समूह जो सेवा पथ पर होता है, वे सामाजिक समस्याओं की पहचान करने के साथ–साथ समाधान ढूंढने और उन्हें सुलझाने में योगदान करता है। सामाजिक सेवा के माध्यम से, सेवा पथ से जुड़े व्यक्ति या समूह समृद्धि, समर्पण और सामाजिक न्याय की ओर प्रबल कदम बढ़ाता है।

इस तरह **'सेवा पथ'** एक मार्गदर्शक शब्द है जो सेवा और समृद्धि की दिशा में अग्रसर होने के लिए सभी को प्रेरित करता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना एक नजर में...

भारत में राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा छात्रों का प्रथम कर्तव्य उनके अध्ययन की अवधि को केवल बौद्धिक ज्ञान तक ही सीमित न रखकर स्वयं को ऐसे व्यक्तियों की सेवा में समर्पित करना है जिन्हें राष्ट्र की वस्तुओं और सेवाओं की आवश्यकता हो और उन्हें हमारे देश की आवश्यक वस्तुएं प्रदान की जा सके, जो कि समाज के लिए अतिआवश्यक है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में स्वैच्छिक आधार पर शैक्षिक संस्थाओं में **''राष्ट्रीय सेवा''** आरम्भ करने की सिफारिश की गयी थी। सन् 1959 में शिक्षा मंत्री के सम्मेलन के समक्ष योजना का एक मसौदा रखा गया। इस दिशा में सटीक सुझाव देने के लिए **28 अगस्त, 1959** को **डॉ. सी. डी. देशमुख** की अध्यक्षता में एक **''राष्ट्रीय सेवा समिति''** का गठन किया गया।

सन् 1960 में भारत सरकार की पहलता पर प्रो. के.जी. सैय्यदेन ने विश्व के कई देशों में छात्रों द्वारा क्रियान्वित **''राष्ट्रीय सेवा''** का अध्ययन किया और कई सिफारिशों के साथ सरकार को युवाओं के लिए **''राष्ट्रीय सेवा''** शीर्षक के तहत अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। डॉ. डी.एस. कोठारी (1964–66) की अध्यक्षता में शिक्षा आयोग ने यह सिफारिश दी की शिक्षा के सभी स्तरों पर छात्रों को सामाजिक सेवा के किसी रूप से जोड़ा जाना चाहिए। इस पर अप्रैल, 1967 में राज्य शिक्षा मंत्री द्वारा उनके सम्मेलन के दौरान विचार किया गया की **''राष्ट्रीय सेवा योजना''** (एन.एस.एस.) नामक एक नया कार्यक्रम प्रदान किया जा सकता है। सितम्बर, 1969 में सभी विश्वविद्यालयों के कुलपति के सम्मेलन में इस सिफारिश का स्वागत किया गया।

मई. 1969 में शिक्षा मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संचालित विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थाओं के छात्र प्रतिनिधियों के सम्मेलन में घोषणा की गई कि **''राष्ट्रीय सेवा योजना''** राष्ट्रीय एकता के लिए सशक्त माध्यम हो सकती है। 24 सितम्बर, 1969 को तत्कालीन शिक्षामंत्री डॉ. वी.के. आर.वी. राव ने सभी राज्यों को शामिल करते हुए 37 विश्वविद्यालयों में **''राष्ट्रीय सेवा योजना''** (एन.एस. एस.) कार्यक्रम आरंभ किया। जिसका प्रथम उद्देश्य विद्यार्थियों में स्वैच्छिक सामुदायिक सेवा के माध्यम से उनके व्यक्तित्व और चरित्र का विकास करना ही नही अपितु **'सेवा के माध्यम से शिक्षा देना'** ही राष्ट्रीय सेवा योजना का मुख्य उद्देश्य है।

आज राष्ट्रीय सेवा योजना विश्व भर में राष्ट्रीय विकास, सेवा, शांति, राष्ट्र निर्माण की दिशा में कार्य करने वाले छात्र समूह की सबसे बड़े रचनात्मक संगठन के रूप में हमारे सामने है। राष्ट्रीय सेवा योजना ने अपने गौरवशाली वर्षों में युवा जागरुकता, राष्ट्र निर्माण और विश्व शांति के लिए अनेकानेक कार्यक्रमों के साथ अपनी पहचान बनाई है। ऐसे महान संगठन में आपका स्वागत है।

आइए! हम सब मिलकर एक समृद्ध राष्ट्र, एक विकसित राष्ट्र, एक जागृत राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दें।

जय हिंद, जय भारत।

कार्ययोजना

राष्ट्रीय सेवा योजना विद्यार्थियों को सृजनात्मक एवं रचनात्मक कार्यों के प्रति प्रेरित कर समाज सेवा का अवसर प्रदान कर उनके व्यक्तित्व को निखारने एवं भविष्य में उन्हें कर्त्तव्यनिष्ठ, संवेदनशील तथा उपयोगी नागरिक के रूप में सवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। राष्ट्रीय सेवा योजना से प्राप्त प्रमाण–पत्र स्वयं सेवकों के अच्छे भविष्य के निर्माण में सहायक हैं। विद्यार्थी शासकीय तथा गैर शासकीय सेवाओं में इन प्रमाण–पत्रों का प्रयोग कर सकते हैं। उच्चतर कक्षाओं के विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के समय राष्ट्रीय सेवा योजना प्रमाण–पत्र धारक छात्रों को अतिरिक्त बोनस अंक भी दिये जाते हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत दो प्रकार के कार्यक्रमों का संचालन होते हैं :–

1. सामान्य कार्यक्रम 2. विशेष शिविर कार्यक्रम

1.सामान्य कार्यक्रम :–

सामान्य कार्यक्रम के अन्तर्गत **'राष्ट्रीय सेवा योजना'** में पंजीकृत प्रत्येक विद्यार्थी को स्वयं सेवक के रूप में एक वर्ष में कम से कम 120 घंटे का समाज सेवा कार्य करना पड़ता है और दो वर्ष की अवधि में अर्थात् 240 घंटे का समाज सेवा कार्य पूरा करने पर उसे विश्वविद्यालय / महाविद्यालय से प्रमाण पत्र दिया जाता है।

2. विशेष शिविर कार्यक्रमः–

राष्ट्रीय सेवा योजना की प्रत्येक इकाई द्वारा वर्ष में एक दस दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया जाता है। शिविर विश्वविद्यालय महाविद्यालय के निकट किसी ग्राम में लगाया जाता है। विशेष शिविर में शिविर अनुभव भी अपना एक विशेष महत्व रखता है। इसमें भाग लेने वाले प्रतिभागी शिविर जीवन का अनुभव प्राप्त करते हैं तथा एक अच्छे नागरिक के कर्त्तव्य का पालन एवं समाज के लिए वे क्या सेवा कर सकते हैं इसका ज्ञान प्राप्त करते हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना की विभिन्न इकाईयों द्वारा स्थानीय आवश्यकताओं स्त्रोतों और कुशल व्यक्तियों को देखते हुए विविध प्रकार के कार्यक्रम अभिग्रहित क्षेत्रों में लिए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त विद्यार्थीगण अन्य क्षेत्रों में भी कार्य के लिए स्वतंत्र होंगे।

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ होती हैं–

- शिक्षा एवं मनोरंजन इसके अन्तर्गत साक्षरता, स्कूली शिक्षा पाठशाला छोड़ने वाले बच्चों की शिक्षा बालगृहों में कार्यशाला प्रवेश कार्यक्रम सांस्कृतिक गतिविधियाँ ग्रामीण एवं देशी खेलकूद सामाजिक बुराईयों के उन्मूलन पर चर्चाएं एवं जागरूकता के कार्यक्रमों का आयोजन मुख्य है।

- आपातकाल के कार्यक्रम विद्यार्थियों को प्रमुख रूप से लोगों को उनकी असहायता पर काबू पाने योग्य बनाने के लिए उनके साथ मिलकर कार्य करने सम्बन्धी कार्यक्रमों पर जोर देना चाहिए। इसके अलावा प्राकृतिक विपदाओं जैसे– भूकम्प, बाढ, तूफान आदि के आने पर सहायता और पुन्रर्वास कार्यो में स्थानीय लोगों अधिकारियों संस्थाओं को सहयोग देना प्रमुख हैं।

- पर्यावरण संवर्धन एवं परिक्षण ऐतिहासिक स्मारकों पुरावशेषों व अन्य सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण एवं उनके प्रति चेतना पैदा करना पर्यावरण के प्रति समाज में चेतना जागृत करना वृक्षारोपण उनका बचाव और अनुरक्षण स्वच्छता के लिए सड़कों गलियों नालियों तालाबों पोखरों कुओं आदि की सफाई भूमि क्षरण की रोकथाम तथा भूमि सुधार गोबर गैस संयत्र सौर ऊर्जा के प्रयोग का प्रचार करना।

- स्वास्थ्य, परिवार, कल्याण और आहार पोषण कार्यक्रम, टीकाकरण, रक्तदान, स्वास्थ्य शिक्षा और प्राथमिक स्वास्थ्य की देखभाल जनसंख्या शिक्षा और परिवार कल्याण रोगियों अनाथों वृद्धों की सहायता स्वच्छ पेयजल के प्रदाय की व्यवस्था एकीकृत बाल विकास तथा पौष्टिक आहार कार्यक्रमों का संचालन करना।

- महिलाओं के स्तर सुधार के कार्यक्रम महिलाओं की शिक्षा तथा उन्हें अपने संवैधानिक और कानूनी अधिकारों के प्रति सचेत करना उनके सशक्तीकरण के उपाय सुझाना उन्हें आत्मनिर्भर बनाने हेतु विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण आदि कार्यक्रम संचालित करना।

- उत्पादनोन्मुखी कार्यक्रम उन्नत कृषि के तरीकों की जानकारी कीट व खरपतवार नियंत्रण भूमि परिक्षण एवं उपजाऊपन की देखभाल कृषि यंत्रों की देखभाल सहकारी समितियों के सुदृढ़ीकरण और उनके प्रोत्साहन के लिए फार्म पशु पालन कुक्कुट पालन पशु स्वास्थ्य के बारे में सहायता एवं मार्गदर्शन कृषि तकनीकों के प्रयोग के प्रति जागरूकता पैदा करना आदि।

- अन्य गतिविधियाँ जो स्थानीय आवश्यकताओं एवं प्राथमिकताओं के आधार पर की जाएँ।

एनसीसी देश की सेकेंड लाइन ऑफ डिफेंस है। अकादमिक स्तर पर विद्यार्थियों को सैन्य प्रशिक्षण देकर राष्ट्र संकल्प की प्रेरणा देता है। एन.सी.सी. का लक्ष्य युवाओं में चरित्र निर्माण, अनुशासन, धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण, साहस की भावना तथा स्वयं सेवा के आदर्शों को विकसित करना है। साथ ही सशक्त राष्ट्र के निर्माण में युवाओं में नेतृत्व गुणों का विकास करना है। राष्ट्रीय कैडेट कोर युवाओं को सशस्त्र बलों में शामिल एवं प्रेरित करने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय कैडेट कोर की यूनिट जुलाई 2023 में अनुशंसित हुई। कड़ी चयन प्रक्रिया में विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित 102 यूपी बटालियन एनसीसी गोरखपुर के प्रथम सत्र में 36 कैडेट्स का चयन किया गया। कुशल संचालन के लिए ए.एन.ओ. डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव को कैडेट्स के प्रशिक्षण एवं विविध गतिविधियों के संचालन का दायित्व प्रदान किया गया है जिनके कुशल मार्गदर्शन कैडेट्स सैन्य प्रशिक्षण का अभ्यास कर रहे हैं ।

कैडेट्स राष्ट्रीय कैडेट्स कोर के मूल संकल्प एकता और अनुशासन के साथ अखंड भारत के संकल्प को पूर्ण करने का सौभाग्य ग्रहण कर रहे है। राष्ट्रीय कैडेट कोर ने स्कूली शिक्षा से विद्यार्थियों को सैन्य सेवा के लिए तैयार करने का चुनौती पूर्ण कार्य किया है। एनसीसी का अहम लक्ष्य शिक्षा के साथ युवाओं को सैन्य अनुशासन का अभ्यास कराके देश की रक्षार्थ प्रेरणा देना है।

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) भारतीय सैन्य कैडेट कोर है जिसका मुख्यालय नई दिल्ली में है। यह एक स्वैच्छिक संस्था है जो पूरे भारत के स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों से कैडेटों की भर्ती करती है। कैडेटों को परेड एवं छोटे हथियार चलाने का बुनियादी सैन्य प्रशिक्षण दिया जाता है। अधिकारियों और कैडेटों को पाठ्यक्रम पूरा करने पर सक्रिय सैन्य सेवा में जाने की कोई बाध्यता नहीं होती है, किन्तु एनसीसी के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों के आधार पर उन्हें चयन के समय सामान्य अभ्यर्थियों की अपेक्षा वरीयता दी जाती है।

राष्ट्रीय कैडेट कोर थल सेना, नौसेना और वायुसेना के सम्मिलन वाला एक त्रिसेवा संगठन है जो देश के युवाओं को संवार कर अनुशासित और देशभक्त नागरिकों में ढाल देता है। एनसीसी की उत्पत्ति को यूनिवर्सिटी कोर के साथ जोड़ा जा सकता है जिसकी स्थापना भारतीय रक्षा अधिनियम 1917 के तहत थल सेना में सैनिकों की कमी को पूरा करने के लिए की गई थी। 1920 में जब भारतीय प्रादेशिक अधिनियम पारित किया गया तो इस यूनिवर्सिटी कोर को यूनिवर्सिटी ट्रेनिंग कोर (UTC) में बदल दिया गया। इसका उद्देश्य यूटीसी की स्थिति सुधारना और इसे युवाओं के लिए अधिक आकर्षक बनाना था। यूटीसी अधिकारी और कैडेट सेना जैसी वर्दी पहनते थे। यह सशस्त्र सेनाओं के भारतीयकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। 1942 में यूटीसी का नाम बदलकर यूनिवर्सिटी ऑफिसर्स ट्रेनिंग कोर (UOTC) रखा गया।

एनसीसी भारत में नेशनल कैडेट कोर एक्ट, 1948 द्वारा गठित किया गया। इसकी स्थापना 15 जुलाई, 1948 को हुई। एनसीसी को यूओटीसी का उत्तराधिकारी माना जा सकता है जिसकी स्थापना ब्रिटिश सरकार द्वारा 1942 में की गई थी। स्वतंत्र भारत में युद्ध और शांति के समय युवाओं को सैन्य अकादमिक

प्रशिक्षण देकर राष्ट्र सेवा के लिए संकल्पित करना था। पंडित हृदयनाथ कुंजरू की अध्यक्षता में स्कूलों व कॉलेजों में राष्ट्रीय स्तर के एक कैडेट संगठन की स्थापना की सिफारिश की। 15 जुलाई, 1948 को राष्ट्रीय कैडेट कोर एक्ट गवर्नर जनरल द्वारा स्वीकार कर लिया गया और इसके साथ ही राष्ट्रीय कैडेट कोर अस्तित्व में आया।

पाकिस्तान के साथ 1965 और 1971 के युद्धों में एनसीसी कैडेट रक्षा की दूसरी पंक्ति में थे। उन्होंने आयुध निर्माणियों की मदद के लिए शिविर आयोजित किये, युद्धस्थल पर हथियार और गोला–बारूद पहुँचाए और शत्रु सेना के पैराट्रूपर्स को पकड़ने वाले गश्ती दलों की तरह कार्य किया। एनसीसी कैडेटों ने नागरिक सुरक्षा अधिकारियों के साथ कधे से कंधा मिलाकर कार्य किया और सक्रिय रूप से बचाव कार्य और यातायात नियंत्रण में भाग लिया। 1965 और 1971 के भारत.पाक युद्धों के पश्चात एनसीसी के पाठ्यक्रम में संशोधन किये गए। केवल रक्षा की द्वितीय पंक्ति होने के बजाय अब इसमें नेतृत्व के गुणों और अधिकारियों जैसे गुणों के विकास पर अधिक बल दिया जाने लगा।

कोर की शुरुआत वरिष्ठ वर्ग के 32.500 और कनिष्ठ वर्ग के 1,35,000 कैडेटों के साथ हुई थी। तब से यह बहुत तेजी से बढ़ी है और अधिकृत कैडेट संख्या अब 1420 लाख तक पहुँच चुकी है। हालांकि यह संख्या अपने आप में काफी महत्वपूर्ण है, फिर भी यह देश के भर्ती योग्य विद्यार्थियों की संख्या का लगभग केवल 3.5 प्रतिशत ही है। एनसीसी की 814 इकाइयों का जाल 4829 कॉलेजों और 12545 विद्यालयों द्वारा संपूर्ण भारत में फैला हुआ है।

एनसीसी को अंतर्सेवा छवि तब प्राप्त हुई जब 1950 में इसमें वायु स्कंध और 1952 में नौसेना स्कंध को भी जोड़ा गया। स्कूल के विद्यार्थियों (कनिष्ठ वर्ग) को प्राथमिक सैन्य प्रशिक्षण दिया जाता था जबकि कॉलेज के विद्यार्थियों (वरिष्ठ वर्ग) को सशस्त्र सेना के संभावित अधिकारी के रूप में प्रशिक्षित किया जाता था। इस प्रयोजन हेतु आर्मर्ड कोर, आर्टिलरी, इजीनियर्स, सिग्नल्स, इफैंटरी और मेडिकल कोर की इकाइयों की स्थापना एनसीसी में की गई।

1960 तक, संपूर्ण भारत के स्कूल–कॉलेजों में एनसीसी की इकाइयों की माँग बहुत बढ़ गई थी। इस बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिए राष्ट्रीय कैडेट कोर राइफल्स (NCCR) की स्थापना की गई। 1962 के चीन के आक्रमण के बाद संपूर्ण देश में एनसीसी को अनिवार्य बना देने की माँग उठी। फलस्वरूप 1963 में कॉलेज के प्रथम तीन वर्षों में 16 से 25 वर्ष की आयु के सभी सक्षम शरीर वाले युवाओं के लिए एनसीसी प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया गया।

1986 में भारत सरकार ने थपन समिति को एनसीसी के लक्ष्यों और उद्देश्यों के संदर्भ में इसके कामकाज का पुर्नमूल्यांकन करने के आदेश दिये। लेफ्टिनेंटे जनरल (रिटायर्ड) एम. एल. थपन (PVC) की अध्यक्षता वाली इस समिति ने अपनी रिपोर्ट जून, 1988 में पेश की। थपन समिति के सुझावों के अनुरूप सरकार ने 1992 में एनसीसी के लक्ष्यों को संशोधित रूप में अनुमोदित किया। जो निम्नवत है–

(i) देश के युवाओं में चरित्र, साहस, भाई–चारे, अनुशासन, नेतृत्व धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण, साहसिक अभियानो, खेल भावना और निःस्वार्थ सेवा के आदर्शों एवं गुणों का विकास करना जिससे कि वे उपयोगी नागरिक बन सकें।

(ii) संगठित, प्रशिक्षित और प्रेरित युवाओं के एक मानव संसाधन का निर्माण करना जो कि सशस्त्र बलों के साथ.साथ जीवन के सभी क्षेत्रों में नेतृत्व प्रदान कर सके और हमेशा देश की सेवा के लिए तत्पर रहें।

रक्षा मंत्रालय द्वारा मार्च 2001 में अनुमोदित किये गए एनसीसी के लक्ष्य इस प्रकार है (1) देश के युवाओं के चरित्र भाई–चारे अनुशासन, नेतृत्व धर्म–निरपेक्षता के दृष्टिकोण साहसिक अभियानों में रुचि खेल भावना और निःस्वार्थ सेवा भाव को विकसित करना।

(iii) संगठित प्रशिक्षित और प्रेरित युवाओं के एक मानव संसाधन का निर्माण करना जो जीवन के सभी क्षेत्र नेतृत्व प्रदान कर सके और देशसेवा के लिए तत्पर रहें।

(iv)सशस्त्र बलों में अपना कैरियर शुरू करने के लिए युवाओं को प्रेरित करने के से तैयार करना।

एनसीसी का आदर्श वाक्य (Motto)

एकता और अनुशासन (Unity and Discipline)

महानिदेशक के चार आधारभूत सिद्धांत :

1. मुस्कान के साथ आज्ञापालन करो
2. समयनिष्ठ रहो
3. निःसंकोच कठिन परिश्रम करो
4. बहाने मत बनाओ और झूठ मत बोलो

एनसीसी के वर्तमान लक्ष्य :

1. देश के युवाओं के चरित्र, भाई–चारे, अनुशासन, नेतृत्व, धर्म–निरपेक्षता के दृष्टिकोण, साहसिक अभियान में रूचि खेल भावना और निःस्वार्थ सेवा भाव को विकसित करना।
2. संगठित प्रशिक्षित और प्रेरित युवाओं के एक मानव संसाधन का निर्माण करना जो जीवन के सभी क्षेत्रों में नेतृत्व प्रदान कर सके और हमेशा देश सेवा के लिए समर्पित रहें।

शपथ : ''मैं सत्यनिष्ठा से लेता/लेती हूँ कि पूरी सच्चाई और श्रद्धा से अपनी मातृभूमि की सेवा करूँगा/करूँगी और एनसीसी के सभी नियमों और अधिनियमों का पालन करूगाँ/करूँगी। इसके अलावा, अपने कमांडिंग ऑफिसर के आदेश और नियंत्रण के अनुसार प्रत्येक परेड और कैम्प में पूरी शक्ति के साथ हिस्सा लूंगा/लूंगी।''

प्रतिज्ञा : हम राष्ट्रीय कैडेट कोर के कैडेट बड़े सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करते हैं कि हमेशा भारत की एकता को बनाए रखेंगे। हम संकल्प करते हैं कि हम भारत के अनुशासित और जिम्मेदार नागरिक बनेंगे। हम अपने साथी जीवों के हित में निःस्वार्थ भाव से सामुदायिक सेवा करेंगे।

विश्व पर्यावरण दिवस

राष्ट्रीय सेवा योजना

विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधे लगाते हुए विश्वविद्यालय के स्वयंसेवक

दिनांक : 05 जून, 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पौधरोपण कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के नर्सिंग संकाय की प्राचार्या डॉ. डी. एस. अजीथा, उपकुलसचिव प्रशासन श्री श्रीकांत महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने विश्वविद्यालय परिसर में स्थित नंदन वन में फलदार पौधे लगाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर नर्सिंग संकाय की प्राचार्या डॉ. डी. एस. अजीथा ने कहा कि जैसे प्रकृति हमें हमारे जीवन में हर प्राकृतिक तत्वों को प्रदान कर हमारे जीवन को सुखमय बनाती है तो हम क्यों न प्रकृति को भी कुछ भेंट करें। ऐसा करने से हमारा ही जीवन सुखमय व्यतीत होगा। आज जैसे इस गर्मी से सभी लोग त्राहि–त्राहि कर रहें है जिसका निदान मानव द्वारा निर्मित तमाम वस्तुएं जैसे– वातानुकुलित वस्तु (एसी), कुलर, फ्रिज आदि से भी नहीं मिल रहा। इसका निदान केवल और केवल यही है कि हम पौधे लगाए और प्रकृति के निर्माण में अपना सहयोग दें। तभी हम और हमारा जीवन सफल बनेगा, क्यूँ कि प्रकृति का साथ, हमारा साथ है।

महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पौधों का जीवन हमारे पर्यावरण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है और ये हमारे समाज के सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। हम पौधे लगाकर पर्यावरण को संतुलित और सुरक्षित बनाने में मदद कर सकते हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दुबे ने कहा कि आज के दिन हमें पर्यावरण के संरक्षण का संकल्प लेना चाहिए और अपने जिम्मेदारी को समझते हुए प्राकृतिक संसाधनों का सम्मान और उसका सही उपयोग करना चाहिए जिससे भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण मिल सकें।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे, माँ पाटेश्वरी सेवाश्रम की अधिक्षिका प्रज्ञा पाण्डेय, डॉ. अमित दुबे, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. गौरीश नारायण, डॉ. संध्या पाठक, डॉ. प्रिया एस. आर. नायर, डॉ. देवी आर. नायर, डॉ. रश्मि पुष्पम, डॉ. एस. याश्मीन, डॉ. नवीन के., डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. गोपी कृष्णा, डॉ. परिक्षित देवनाथ, डॉ. विकास यादव, सृष्टि यदुवंशी, धनन्जय पाण्डेय, राष्ट्रीय कैडेट कोर के ए.एन.ओ. डॉ. संदीप श्रीवास्तव, राष्ट्रीय सेवा योजना के समस्त स्वयंसेवक एवं विश्वविद्यालय के विद्यार्थी उपस्थित रहें।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोर
राष्ट्रीय सेवा योजना
विश्व पर्यावरण दि

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर
राष्ट्रीय सेवा योजना
विश्व पर्यावरण दिवस

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर
राष्ट्रीय सेवा योजना
21 जून, 2024
अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस
S.K

योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग करते विश्वविद्यालय के विद्यार्थी एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक

दिनांक : 21 जून, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा 10 वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योगाभ्यास कार्यक्रम कराया गया। जिसका शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल बाजपेई, कर्नल डॉ. राजेश बहल निदेशक महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय गोरखपुर एवं डॉ. मंजुनाथ एन.एस. ने द्वीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उसके उपरान्त डॉ. मंजूनाथ एन.एस. प्राचार्य गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस एवं योग प्रशिक्षक श्री चन्द्रजीत यादव ने सभी को विभिन्न प्रकार के योग सूक्ष्म यौगिक व्यायाम (शिथीलीकरण की क्रिया), योगासनः खड़े होकर किये जाने वाले आसन. ताडासन,बृक्षासन, पादहस्तासन, अर्धचन्द्रासन, त्रिकोणासन बैठकर किये जाने वाले आसन–भद्रासन, अर्ध उष्ठासन, शशकासन, वक्रासन, उत्तानमंण्डुकासनय उदर के बल लेटकर किये जाने वाले आसन दृभुजंगासन, शलभासन, मकरासनय पीठ के बल लेटकर किये जाने वाले आसन–सेतुबन्धासन, पवनयुक्तासन, शवासनय कपालभाति क्रिया, प्राणायाम अनुलोम विलोम, नाडी शोधन, शीतली, भ्रामरी (उद्गीत) शाम्भवी मुद्रा में ध्यान एवं अंत में शांति पाठ के साथ योगाभ्यास कराया गया। डॉ. मंजूनाथ ने सभी योग मुद्रा करने के तरीके एवं उससे होने वाले फायदे के बारे में सभी बताया वही श्री चन्द्रजीत यादव ने सभी योग मुद्रा करके दिखाया।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल कुमार बाजपेई ने 10वें अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर उपस्थित सभी को शुभकामनाएं देते हुए बताया कि आज हम सभी ने जो योग के माध्यम से सिखा है उसे आत्मसाध करना चाहिय, योग प्राचीन भारतीय परम्परा एवं संस्कृति की अमूल्य देन है। योग मात्र व्यायाम नहीं है, बल्कि स्वयं और प्रकृति के साथ बीच संयम एवं संतुलन है योग। दिमागी तनाव के बीच मन की शांति है योग। विचलित करने वाले क्षणों से निकालकर ध्यान और एकाग्रता को बढ़ाता है योग।

निराशा और भय के बीच योग आशा, शक्ति और साहस है। योग मन को शांति देता है। वे लोग जिनके मन में शांति है वह दूसरों को भी शांति देते हैं इसलिए हम सभी को जिंदगी अच्छे से जीने के लिए प्रतिदिन योग करते रहना चाहिए।

कार्यकम समन्वयक राष्ट्रीय सेवा योजना डॉ. अखिलेश कुमार दुबे ने इस अवसर पर सभी को शपथ दिलाया। 'मैं शपथ लेता/लेती हूँ कि मैं स्वयं तथा अपने परिवार के साथ नियमित रूप से योगाभ्यास कर योग को जीवन शैली के रूप में आत्मसात करूंगा/करूंगी, मैं अपने कर्तव्य निर्वहन के प्रति, कुटुंब एवं कार्य के प्रति तथा समाज एवं समूचे विश्व में शांति, स्वास्थ्य और सौहार्द के प्रसार के लिए कृत संकल्पित रहूँगा/रहूँगी' कार्यक्रम के अन्त में प्रो.शशिकांत सिंह संकायाध्यक्ष फार्मेसी संकाय ने आए सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया एवं छात्रा अंजली, कुसुम काजल ने राष्ट्रीय गीत वन्देमातरम गाकर कार्यक्रम का समापन किया।

कार्यक्रम में उप कुलसचिव (प्रशासन) श्री श्रीकांत, डॉ. विकाश यादव, डॉ. कीर्ति कुमार यादव, प्रज्ञा पाण्डेय, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव, कुवर अभिनव सिंह राठौर, डॉ. अभिषेक सिंह, सुमन सिंह, प्रिया सिंह, शक्ति जायसवाल, साक्षी प्रजापति, कविता साहनी, अंकिता, स्मृति, अविनाश कमल, कमलनयन श्रीवास्तव, ओंकार, अनिल कुमार पाल तथा रवि यादव इत्यादि विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी योगाभ्यास में सम्मिलित हुए।

विश्व पर्यावरण दिवस

राष्ट्रीय कैडेट कोर

विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधे लगाते हुए एन.सी.सी. के कैडेट

दिनांक : 05 जून, 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के एन.सी.सी. कैडेट्स ने फलदाई पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित पौधारोपण दिवस पर गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग की प्राचार्या डॉ. डी. एस. अजीथा, गुरु गोरखनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के निदेशक कर्नल डॉ. राजेश बहल, प्रशासनिक कुलसचिव श्री श्रीकांत, अधिष्ठाता डॉ. विमल दूबे, राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्यव्यक डॉ. अखिलेश दुबे एवं ए.एन.ओ. डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने फलदाई पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया।

विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित पौधारोपण दिवस पर गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग की प्राचार्या डॉ. डी. एस. अजीथा ने कहा कि हमारे पुराणों में उल्लेखित है कि एक वृक्ष दस पुत्र के समान होते है। वर्तमान समय में तेजी से पर्यावरण में परिवर्तन आया है। अगर अब भी हम नहीं चेते और पर्यावरण बचाने के लिए पौधरोपण नहीं किया तो हमारी आने वाली पीढ़ी हमें कभी मांफ नहीं करेगी।

आज वृक्षों के आभूषण से धरती मां विहीन हो गयी है। इसके चलते ही भू–गर्भ जलस्तर तेजी से नीचे जा रहा है।

इस अवसर पर कर्नल डॉ. राजेश बहल ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधरोपण आवश्यक हैं। पेड़ों के अंधाधुंध कटाव से धरती वृक्षहीन होती जा रही हैं। जन–जन को अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर कम से कम एक पौधा निश्चित रूप से लगाना चाहिए। प्रशासनिक कुलसचिव श्री श्रीकांत जी ने विद्यार्थियों की संबोधित करते हुए कहा कि पेड़ काटने में घंटों का समय लगता है।

पौधारोपण करने में कुछ मिनट्स या सेकेंड लगते है पर उसे पौधे से पेड़ बनने में कई वर्ष की लंबी यात्रा और प्रक्रिया लगती है। उसके बाद भी हम पौधे लगाने में नहीं पेड़ काटने में ज्यादा गंभीरता दिखाते हैं। इसी तरह से पेड़ों पर यदि कुल्हाड़ी चलती रही तो वह दिन दूर नहीं जब आने वाली पीढ़ियां पेड़ों की छाया तक तरस जाएगी। हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है की हम सभी मिलकर पेड़ों की घटती संख्या को बढ़ाकर पर्यावरण को बचाने में अपनी महती भूमिका सुनिश्चित करें।

इस अवसर पर राष्ट्रीय कैडेट कोर के ए.एन.ओ. डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि पेड़ प्रकृति का छाता है अगर इस छाते को हमने काट दिया तो प्रकृति की छाव से पूरी धरती वीरान और बंजर हो जाएगी। प्रकृति के प्रति हमें संवेदनशील होना होगा। पौधे सिर्फ सोशल मीडिया या मोबाइल पर नहीं उगते है उसके लिए जमीनी स्तर पर हमें पौधे लगाने होंगे नहीं तो प्रकृति का कोप और दुष्परिणाम भी हमारे पीढ़ी को झेलना होगा।

पौधारोपण कार्यक्रम में इस अवसर पर डॉ. अमित दुबे, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. विकास यादव, सृष्टि यदुवंशी, धनन्जय पाण्डेय, राष्ट्रीय सेवा योजना के डॉ. अखिलेश दुबे सहित अंडर ऑफिसर सागर जायसवाल, सागर यादव, अभिषेक चौरसिया, कृष्णा त्रिपाठी, आदित्य, श्रद्धा शुक्ला, आंचल, प्रियेश मणि त्रिपाठी, प्रीति शर्मा, पूजा सिंह, चांदनी सहित सभी कैडेट्स ने पौधारोपण किया।

योग दिवस

राष्ट्रीय कैडेट कोर

योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग करते हुए राष्ट्रीय कैडेट कोर के स्वयंसेवक

दिनांक : 21 जून, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में 10 वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर 102 यू.पी. बटालियन के एन.सी.सी. कैडेट्स ने योगाभ्यास कर स्वस्थ जीवन का संकल्प लिया। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के योग पार्क में प्रातः कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेई जी के सारस्वत उपस्थिति में सभी कैडेट्स ने योग की विभिन्न क्रियाओं को अंगीकार किया। कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेई जी ने कहा की योग से मनुष्य शारारिक, मानसिक एवं आत्मिक उर्जा को प्राप्त करता है। इससे शरीर तथा मन की शुद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है। योग आनंदमय जीवन जीने की कला है। आधुनिक समय में वर्तमान की जीवन शैली में मानव शरीर विकृत स्वास्थ्य से ग्रसित हो चुका है। तनाव, चिंता, अवसाद से अनेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक व्याधियों से मुक्ति पाने की अचूक औषधि योग है। योग दिवस को एक दिन अभ्यास कर सिर्फ कोरम पूरा करने की नियति न बनाए इसे नियमित अपनी दिनचर्या में शामिल कर स्वस्थ जीवन के प्रति सचेत रहने का सभी को संकल्प लेना होगा।

योग दिवस पर राष्ट्रीय कैडेट कोर के ए.एन.ओ. डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा की योगाभ्यास से मन में एकाग्रता और हृदय में शांति का अनुभव होता है। आध्यात्मिक दृष्टि से योग का तात्पर्य समाधि से है, योगाभ्यास से साधक स्वयं को साध कर आत्म साक्षात्कार कर आनंदित होता है। संपूर्ण विश्व के लोग भारत से योग क्रियाओं को अंगीकार कर स्वयं को स्वस्थ रखने की संजीवनी ग्रहण कर रहे है। योग सूत्र में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि की विस्तार से वर्णन है। जिसे नियमित अभ्यास कर साधक सुखी और स्वस्थ जीवन का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। योगा अभ्यास में आयुर्वेद प्राचार्य डॉ. मंजुनाथ एन.एस. ने योग का अभ्यास करवाया। योग अभ्यास में प्रमुख रूप से सूर्य नमस्कार, सुखासन सेतु बांध आसन, नटराज आसन, गोमुख आसन, भुजंग आसन, व्रजासन, अर्ध चंद्रासन कर सभी कैडेट्स ने नियमित योग करने की शपथ लिया।

आयोजन में प्रमुख रूप से कर्नल डॉ. राजेश बहल, डॉ. मंजुनाथ एन.एस.ए उपकुलसचिव (प्रशासन) श्री श्रीकांत, योग प्रशिक्षक श्री चन्द्रजीत यादव, डॉ. अखिलेश कुमार दुबे, डॉ. विकाश यादव, डॉ. कीर्ति कुमार यादव, प्रज्ञा पाण्डेय, डॉ. प्रेरणा अदिति, कुवर अभिनव सिंह राठोर, श्री कमल नयन श्रीवास्तव, श्री रवि यादव, सार्जेंट खुशी गुप्ता, दरख्शा बानो, चांदनी निषाद, खुशी यादव, प्रीति शर्मा, अमृता कन्नौजिया, अश्मिता सिंह, आदर्श मौर्य, हर्यश्व कुमार साहनी, अभिषेक चौरसिया, सीनियर अंडर ऑफिसर सागर जायसवाल, अनुभव, प्रियेश राम त्रिपाठी, भानु प्रताप सिंह, अंडर ऑफिसर मोती लाल, पूजा सिंह, श्रद्धा उपाध्याय, आंचल पाठक आदि ने योग दिवस में सम्मिलित हुए।

ज्ञान के मंदिर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में कृषि संकाय के द्वितीय सेमेस्टर का छात्र हूँ। विश्वविद्यालय में 102 यू.पी. बटालियन के यूनिट्स में कैडेट्स के रूप में भर्ती होकर देश सेवा करने का सपना पूरा हुआ है। बचपन से ही फौजियों को देखकर उनके जैसा बनने का जज्बा शुरू से रहा। बटालियन द्वारा दस दिवसीय संयुक्त वार्षिकी प्रशिक्षण शिविर महाराजगंज में सैन्य प्रशिक्षण लेने का सौभाग्य मिला। शिविर में जाने से पूर्व परेड के दौरान ए.एन.ओ. डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव सर ने कैंप में सैन्य प्रशिक्षण जीवन में स्वयं को ढालने की तैयारी करवाकर सैन्य प्रशिक्षण के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से संबल दिया।

शिविर में डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन होने के बाद से शिविर की दिनचर्या के लिए तैयारी शुरू हो गई। पहले दिन ही मुख्य द्वार पर सजग प्रहरी के रूप में रात्रि की ड्यूटी ने ये अहसास करा दिया की कैसे देश के जवान बॉर्डर पर एक ऑर्डर पर अपनी ड्यूटी के लिए तैयार हो जाते है। बिना झपकी लिए चौकस भरी नजरो से शिविर की सुरक्षा व्यवस्था बडी जिम्मेदारी रही। रात्रि विश्राम से पूर्व सांस्कृतिक कार्यक्रम को दूर से निहारने का आनंद भी सुखद रहा। 10 दिनों का समय सारणी सुबह 5 बजे से रात्रि 9 बजे तक का था। और पूरे दिन में जो भी गतिविधियाँ होती थी उन सबका समय सारणी के अनुसार हर समय एक ऑर्डर पर तैयार रहने के लिए अलर्ट रहना अनुशासन के साथ स्वयं को विपरीत परिस्थितियों में ढालना भी एक नई चुनौती थी।

प्रतिदिन अलसाई भोर में 4 से 5 बजे के बीच परेड ग्राउंड पर कैंप सीनियर सागर जायसवाल सर को अपने कंपनी के एक–एक साथी की रिपोर्ट करना, कौन कहां, कैसा है ये भी ड्यूटी का हिस्सा था। शिविर में नास्ता, भोजन, परेड, सैन्य प्रशिक्षण, खेल प्रतियोगिता और सांस्कृतिक प्रतियोगिता से सभी कंपनी के कैडेट्स खुद को एक दूसरे से बेहतरीन साबित करने की प्रतिस्पर्धा में लगे रहते थे।

विजेता बनने के लिए कोई कसर छूट न जाए भीषण गर्मी में कड़ी मेहनत और अभ्यास हमारे हौसले को बुलंद कर रहा था। प्रतियोगिताओं में वाद–विवाद (डिबेट) प्रतियोगिता, क्विज़ (प्रश्नोत्तरी) प्रतियोगिता, सांस्कृतिक कार्यक्रम, ट्रेजर हंट, टॅग ऑफ वार, कांपस मैप रीडिंग, क्वार्टर गार्ड, डेमो पार्टी, फ्लैग एरिया, पायलेटिंग मार्च पास्ट, फ्लैग एरिया आदि में उत्कृष्ठ प्रदर्शन कर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने उपविजेता टीम होने का गौरव प्राप्त किया। इस सैन्य प्रशिक्षण शिविर का हिस्सा बन कर सैन्य सेवा के लिए खुद को तैयार करने की प्रेरणा मिली है। 10 दिनों के कैंप से स्वयं के साथ अपने साथी कैडेट्स के साथ अनुशासन और प्रतियोगी प्रतिस्पर्धा में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने की प्रेरणा ने जीवन के अंधकार को दूर करने की नई रोशनी दिया है।

– अभिषेक चौरसिया, कार्पोरल

राष्ट्रीय कैडेट कोर भारत के युवा संगठन में से एक है। एन.सी.सी. का गठन युवाओं में सेना के प्रति जागरुकता लाने और उन्हें सैन्य स्तर पर तैयार करने के लिए किया गया था। एन.सी.सी. का संबंध भारत की तीनो सेनाओं जल, थल एवं वायु सेना से है। एन.सी.सी. का मुख्य कथन एकता और अनुशासन है।

प्राथमिक शिक्षा के दौरान से ही देश सेवा के क्षेत्र में जाने की इच्छा रही है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में कृषि विभाग से शिक्षा लेने का सौभाग्य मिला। विश्वविद्यालय में 102 यू.पी. बटालियन की यूनिट आने से मेरे सपने को पंख मिल गया। राष्ट्रीय कैडेट कोर की एन.सी.सी. की अनेक विशेषताओं एवं लाभों को जानने के बाद मेरी तीव्र इच्छा थी कि में भी एन.सी.सी. में भर्ती हो सकूं इसके लिए मैंने दौड़ने की प्रैक्टिस शुरू की और बीएससी के तृतीय सेमेस्टर में मेरी कोशिश सफल हई। कड़ी परीक्षा, शारीरिक नाप जोख, दौड़ के साथ चयन की प्रक्रिया हुई।

मुझे देशप्रेम व समाजसेवा की मेरी आंतरिक इच्छा को जैसे पंख मिल गया। यह मेरा सौभाग्य था कि मुझे कुछ महीनों बाद सीनियर अंडर ऑफिसर के रूप में चुना गया महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में एन.सी.सी. के ए.एन.ओ. डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव जी अत्यंत सक्रिय एवं अनुशासन प्रिय हैं जिनके मार्गदर्शन में हमने जहाँ एक ओर परेड ग्राउंड पर सैन्य प्रशिक्षण के लिए तैयार हो रहे हैं वही विश्वविद्यालय और बटालियन स्तर पर होने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक प्रतियोगिता से स्वयं को निखारने का सौभाग्य मिला। स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता है कि मैं NCC कैडेट हूँ और देश व समाज के हित के लिए कुछ योगदान कर रहा हूँ। संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर महराजगंज के धनेवा धनेई में पूरे शिविर में कैंप सीनियर की जिम्मेदारी निर्वाहन करने का सौभाग्य मिला। कैंप सीनियर के रूप में पूरे शिविर के कैडेट्स को सैन्य जीवन के साथ सामंजस्य बनाने के लिए निरंतर प्रेरणा देना जीवन को नई दिशा देने में सहायक रहा। कैंप में कैडेट्स का नेतृत्व करना, सुबह शाम रोल काल परेड के लिए सभी की रिपोर्टिंग लेना और सभी कंपनियों के कैडेट्स की ड्यूटी चार्ट का निरीक्षण करना चुनौती पूर्ण रहा। कैम्प के दौरान नेतृत्व गुण को विकसित करने के साथ स्वयं में अनुशासन और सभी को सैन्य प्रशिक्षण के लिए प्रेरित करना दैनिक दिनचर्या का हिस्सा रहा। घर के आंगन से निकलकर विश्वविद्यालय में और शिविर में सैन्य प्रशिक्षण ने विपरीत परिस्थितियों में मेरे लक्ष्य को नई दिशा और प्रेरणा दिया है।

शिविर में सैन्य प्रशिक्षण के साथ, सांस्कृतिक कार्यक्रमो में भी प्रतिभाग कर विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व कर उपविजेता बनने का सौभाग्य अनमोल रहा है। ए.एन.ओ. डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव जी के कुशल मार्गदर्शन और नेतृत्व में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के दबब कैडेट्स ने 35 गोल्ड मेडल्स लेकर उपविजेता बनने का सौभाग्य ग्रहण किया।

शिविर में फायरिंग का अवसर प्राप्त हुआ। शिविर में सैन्य प्रशिक्षण, अलग–अलग प्रकार की राइफल मैप रीडिंग कंपास जैसी अन्य जानकारी से सैन्य जीवन को जीने का अनुभव रोमांचकारी रहा।

– सागर जायसवाल, सीनियर अंडर ऑफिसर

संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में 10 दिन तक सैन्य प्रशिक्षण के लिए स्वयं को तैयार करने के लिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर 102 यू.पी. बटालियन गोरखपुर के ए.एन.ओ. डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव सर ने शनिवारी परेड में पूरे यूनिट्स को कड़ा अभ्यास कराके विपरीत परिस्थितियों में स्वयं को ढालने के लिए तैयार कर दिया था। ऐसे में शिविर में सम्मिलित होने का रोमांच हर परेड में हम सभी को सैन्य जीवन से जुड़ने की प्रेरणा दे रहा था।

महाराजगंज के धनेवा में जिला कारागार के पास ही हमारा शिविर हुआ करता था एक ओर सैन्य प्रशिक्षण शिविर और एक ओर शांत कोठरी में सिमटे कैदियों की सासो को भी हम सभी महसूस कर रहे थे। जीवन में आक्रोश और भूल से एक मानव कैसे पथ से विचलित हो जाता है, फिर भी फायरिंग एरिया से गुजती गोलियों की आवाज से अब हम सहमते नही थे बल्कि अब रायफल को उठाकर सैन्य अभ्यास कर रोमांचित हो रहे थे। एनसीसी अधिकारियों द्वारा शिविर में गर्ल्स यूनिट की जिम्मेदारी निर्वाहन करने की चुनौती को मैने स्वीकार किया। कैंप के दौरान एकता और अनुशासन के ध्येय वाक्य के साथ सभी कैडेट्स के साथ कैसे सामंजस्य स्थापित करना है, उनके सुख दुःख, दर्द को महसूस करने की अभिव्यक्ति को करीब से महसूस करना जिम्मेदारी का हिस्सा था। आदेश का पालन करना, मिले हुए आदेश को सभी कैडेट्स से साझा कर कार्य को पूरा करवाने की लाइडरशिप गुण को विकसित करने का अवसर स्वयं में रोमांच से भरा होता था। जिससे स्वयं में आंतरिक, सामाजिक और मानसिक वृद्धि हुई। इस कैंप ने घर, परिवार के सामाजिक माहौल से दूर एकजुट होकर विभिन्न परिस्थिति मे जीवन जीने का पाठ् आजीवन प्रेरणा देता रहेगा। इस कैंप में हमने योगा, ड्रिल, मार्च पास्ट, मेढक चाल आदि जैसी चीजे सीखी 22 Rifle के विभिन्न भागो के बारे मे जानने एवं 22 राइफल को खोलना, जोड़ना तथा अन्य राइफल एसएलआर के बारे में जानकारी मिली तथा फायरिंग का अवसर प्राप्त हुआ। इस कैंप मै हमने अलग–अलग प्रतियोगिताओं जैसे टग् ऑफ वार, डीबेट, क्वीज़, क्वाटर गॉर्ड डेमो पार्टी और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रतिभाग किया और महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय नें द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कैंप के दौरान हमने मैप रीडिंग कंपास फ्लैग एरिया पायलटिंग जैसी अन्य चीजें सीखी। शिविर में 11 विद्यालयों के कॉलेज से आये सारे कैडेट्स के साथ बिना धर्म, जाति का भेदभाव किये बेगार एक जुट हंसी खुशी परिवार की तरह रहना सिखा और इसी प्रकार कैंप के आखरी दिन हमने अपने मनोरंजन के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम (कैंप फायर) के साथ इस 10 दिवसीय कैंप को विश्राम मिला।

शिविर के लिए मैं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल कुमार वाजपेई जी, कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, कृषि अधिष्ठाता डॉ. विमल दूबे और ए.एन.ओ. अधिकारी डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव सर का हृदय से आभार जिन्होंने राष्ट्रीय कैडेट कोर में मुझे सम्मलित होने का अवसर दिया निश्चय ही एन.सी.सी. मेरे जीवन को एक नई दिशा दिया है।

– खुशी गुप्ता, सार्जेंट

जय हिन्द, मैं कैडेट पूजा सिंह मुझे महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के 102 यू.पी. बटालियन यूनिट्स से संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर और राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर में सैन्य प्रशिक्षण लेने का सौभाग्य मिला। दोनो ही शिविर का रोमांच और अनुशासन ने मेरे जीवन को एक नई दिशा देने का कार्य किया है। एनसीसी ज्वाइन करने से पहले एक आम लड़की की तरह सभी चुनौती से खुद से लड़ रही थी पर वर्दी पहनना, सैन्य प्रशिक्षण के लिए ग्राउंड पर खुद को साबित करना बहुत ही चुनौतीपूर्ण रहा है। वर्दी की शान में खुद को एक सैनिक महसूस करना किसी रोमांच से कम नहीं है, विश्वविद्यालय में परेड ग्राउंड के पहले दिन से ही खुद को कैडेट्स के रूप में ढालना और कदमताल करते हुए अपने आप को सैन्य प्रशिक्षण के लिए तैयार करना, हर समय आदेश का पालन करना और आर्डर के लिए अलर्ट रहना प्रशिक्षण का हिस्सा बन गया था। अपने सीनियर्स से शिविर में होने वाली ट्रेनिंग को सुन–सुनकर आने वाले चुनौतियों में स्वयं को ढालने लगे थे। आखिरकार संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में परेड ग्राउंड से लेकर सैन्य प्रतियोगिताओं, सांस्कृतिक प्रस्तुति में श्रेष्ठ प्रदर्शन के आधार पर मेरा चयन राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर के लिए हुआ।

राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर में क्वार्टर गार्ड कमांडर के रूप में आर्मी के उस्ताद से मिलने वाली छोटी–छोटी नसीहत और फटकार के साथ मिलने वाली दंड सजा ने भी सैन्य जीवन के पथ पर चलने की प्रेरणा दिया है। कैम्प में डिफेंस के कई पहलुओं से जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ तथा इसमें कई प्रतियोगिताओं में भाग करने का अवसर भी मिला। इस कैम्प में मैने बैरेट फाइटिंग, टग ऑफ वॉर, ट्रेजर हंट, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया ये सभी प्रतियोगिताएं हमें मानसिक तथा भौतिक रुप से दृढ़ और आत्मविश्वास से परिपूर्ण बनाते है। इस कैम्प के दौरान मुझे सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, सांकृतिक प्रतियोगिता, टग ऑफ वॉर में प्रथम स्थान के साथ स्वर्ण पदक विजेता बनने का भी अवसर प्राप्त हुआ। CATC 151 के दस दिवसीय कैम्प ने हमारे जीवन में सतत कड़ी मेहनत करते रहना और एकता, अनुसासन के साथ एक व्यवस्थित समाज का नागरिक बनना सिखाया है।

राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर शिविर में हमें डिफेंस का उच्च प्रशिक्षण दिया गया। एनसीसी ड्रिल, एनसीसी ड्रेसिंग, अनुशासन, एनसीसी वर्ड ऑफ कमांड कॉशन, शस्त्र प्रशिक्षण दिया गया। शिविर में क्वार्टर गार्ड प्रशिक्षण तथा रायफल सैल्यूट प्रशिक्षण दिया गया। मुझे क्वार्टर गार्ड में गार्ड कमांडर के रूप में कंपनी का नेतृत्व करने का अवसर प्राप्त हुआ। हमें इस दस दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर में उच्च प्रशिक्षण दिया गया तथा आगे IGC और RDC शिविर के लिए प्रेरित किया गया। शिविर में मुझे क्वार्टर गार्ड का गार्ड कमांडर के रूप में नेतृत्व कमांडिंग ऑफिसर अखिलेश मिश्रा सर के द्वारा उपहार से सम्मानित किया गया। इस शिविर का अनुभव बहुत ही रोमांचक रहा। राष्ट्रीय कैडेट कोर हमे आगे बढ़ने के लिए हमेशा प्रेरित करता रहेगा।

धन्यवाद!

– पूजा सिंह, लांस कार्पोरल

मैं कैडेट आशुतोष सिंह महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर, 102 यूपी बटालियन एनसीसी का कैडेट हूं। राष्ट्रीय कैडेट कोर 102 यू.पी. बटालियन के संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर महाराजगंज जिला हमारा कैंप जाने वाला है। यह मुझे जान कर बेहद खुशी मिली, मुझे नही पता था कि ये मेरे जीवन का एक टर्निंग प्वाइंट है। शिविर में सम्मिलित होने का मैं बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था, आख़रिकार वो दिन आ ही गया जिस दिन हमें अपने घर वालो से आशीर्वाद और प्रेम लेकर कैंप के लिए जाना था, 9 बजे कॉलेज पर सभी कैडेट आ गए थे हमारे कॉलेज से बस हमें लेकर जाने वाली है, 11 बजे हम कैंप के लिए निकले वाले हैं 1:30 घंटे का सफर तय करने के बाद हम सब महराजगंज पहुचे। कैंप पर आने के बाद हम सभी का डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन हुआ हमें एक रूम मिला जिसका नंबर 29 था हम सभी कैडेट जोश और उमंग से भरे हुए थे। सैन्य प्रशिक्षण शिविर में होने वाली सभी गतिविधियों को जानने की उत्सुकता अपने चरम पर थी। अब क्या होने वाला है। इसके बाद क्या होगा कौन सा आर्डर मिलेगा और मेस में क्या व्यंजन पक रहा होगा। वहीं दूसरी ओर हम सभी इस बात से अंजान थे की सैन्य प्रशिक्षण शिविर में कि हमे कितनी पीड़ा और कड़े अभ्यास से गुजरना है। ठीक शाम के समय हमारे सीओ और इंस्ट्रक्टर हम सभी कैडेट को शिविर के नियम समझाया हमें क्या करना है और क्या नहीं करना है ।

पहले दिन हम सभी ने सुख की नींद लिया। असली ज़ंग कल सुबह शुरू होने वाली है पहला दिन ज्यादा कुछ नहीं, पर इस कड़कती धूप में जाने का मन नहीं कर रहा था पर जाना तो पड़ेगा हमारे सीनियर अंडर ऑफिसर सागर जायसवाल, पूरे कैंप लीड करने का का सौभाग्य मिला है, हम सभी कैडेट को यह बात जानकर बहुत खुशी मिली। और रात्रि ड्यूटी मुख्य द्वार पर हमारी लगी थी उसका शेड्यूल फिक्स था पर मेरा ड्यूटी 12 से 2 तक का था। थोड़ी समस्या होती थी पर ये सोच कर की हमारे तरह ही बॉर्डर पर हमारे जवान भी ड्यूटी करते है तो ये मेरा सौभाग्य है। बीर बहादुर की खोज में हमारी अगली ड्यूटी मेस में लग गई, रोज हरी मिर्च मसाला की खोज में हमारी पलटन निकल जाती थी, फिर भंडारी उस्ताद के साथ खाने के जायके की निगरानी भी हमारे ट्रेनिग का हिस्सा था। कृषि का छात्र होने से मंडी में अच्छी सब्जियों की पहचान करना और बाजार के मूल्य भाव को सीखने को मिला। कैम्प कमांडेड श्री अखिलेश मिश्रा सर और कर्नल अभिषेक मान सिंह, जेसीओ और उस्तादो की संगत में हर रोज बहुत कुछ सीखने को मिलता था।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की टीम दैनिक दिनचर्या के साथ प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ठ प्रदर्शन कर रही थी। कड़ी स्पर्धा के साथ विश्वविद्यालय की टीम को उपविजेता बनने का सौभाग्य मिला। शिविर में अनुशासन, मेटल एबिलिटी, ड्रेसिंग सेंस, बॉडी लैंग्वेज, और अपने आप को पॉजिटिव रखना सीखा। अब मुझे यह एहसास होता है एक सामान्य वर्दी और एक ऑफिशियल वर्दी में क्या अंतर है। इस वर्दी को पहनने में एक अलग ही ज़ज़्बा और जुनून होता है। अन्त में बस इतना ही कहना चाहूंगा हम सभी कैडेट सबसे अलग और सबसे बेहतर है और जिंदगी में कुछ कर जाने का जज्बा कायम रखते हैं।

जय हिन्द...

– आशुतोष सिंह, कैडेट

मैं 102 यूपी बटालियन एनसीसी की कैडेट प्रीति शर्मा, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय छात्रा हूं। संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर एवं राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर में सम्मिलित होकर का सौभाग्य मिला। यह मेरे जीवन का एक उत्कृष्ट प्रदर्शन था। दस दिवसीय प्रशिक्षण शिविर CATC-CAMP से आने के बाद फिर से हमें एक सुनहरा मौका मिला क्योंकि हमें TSC चयन के लिए UP 102 बटालियन से निमंत्रण मिला। CATC 1 (151 CAMP) में निजी शिविर में मेरे उत्कृष्ट प्रदर्शन के अवलोकन के बाद मेरा चयन राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर में हुआ। इस शिविर में हमें रक्षा क्षेत्र में अग्रिम प्रशिक्षण दिया गया साथ ही एनसीसी ड्रिल प्रशिक्षण, टर्न आउट, हथियार प्रशिक्षण फायरिंग, क्वार्टर गार्ड प्रशिक्षण में राइफल सलामी की ट्रेनिंग उस्तादों द्वारा दिया गया।

क्वार्टर गार्ड दल में मुझे कंपनी गार्ड पार्टी का नेतृत्व करने का अवसर मिला। क्वार्टर गार्ड में अंडर गार्ड कमांडर के लिए 10 दिनों तक उच्च स्तर का प्रशिक्षण दिया गया और भविष्य में आईजीसी और आरडीसी शिविर के लिए प्रेरित किया गया। इस शिविर में प्रशंसनीय कार्य के लिए शिविर के उच्च अधिकारी कैम्प कमांडेड द्वारा उपहार देकर सम्मानित किया गया। अंडर गार्ड कमांडर के रूप में गार्डर गार्ड का नेतृत्व करने और सावधानी बरतने, अनुशासन के लिए मिलने वाले सभी निर्देशों का पालन करना हमारे दैनिक दिनचर्या का हिस्सा था। यह राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर हमें हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगा और सबसे बड़ी बात यह है कि मैं खुद को यह साबित करने के लिए आत्मविश्वास के डर के साथ आती हूं कि एक लड़की होने के बाद कुछ भी असंभव या कठिन नहीं है, यहां तक कि मैं इस कठिन प्रशिक्षण को भी कर सकती हूं। या वह काम जो एक लड़का कर सकता है। और हम दोनों पूजा और मैं यह साबित करते हैं कि इस राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर में हमने पूरी ऊर्जा और जोश के साथ अपनी कड़ी मेहनत, आत्मविश्वास और आत्म. विश्वास से 14 लड़कों को हराया। मैं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के एनसीसी एएनओ डॉ. संदीप श्रीवास्तव सर को धन्यवाद देती हूं कि सर ने राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर के दौरान शिविर में आकर हमारा मनोबल बढ़ाकर सदैव लक्ष्य साधने के लिए प्रेरित किया। और हमें एक पिता की तरह आशीर्वाद दिया।

धन्यवाद सर!

– प्रीति शर्मा, कैडेट

मेरा नाम आदित्य विश्वकर्मा है और मैं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में बीएससी बॉयोटेक्नोलॉजी द्वितीय वर्ष का छात्र हूँ। विश्वविद्यालय के 102 यूपी बटालियन एनसीसी का कैडेट हूँ। एनसीसी शिविर में सम्मिलित होने की लिए मैं बहुत ही उत्साहित था। परेड के दौरान ए.एन.ओ. डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव सर अपने समय के कैम्प के अनुभवों को हम सभी से साझा कर समय–समय पर कड़े अभ्यास से शिविर के लिए तैयार कर रहे थे। आखिरकार 6 महीने के लंबे अंतराल के बाद एनसीसी के संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में सम्मिलित होने का अवसर हम सभी को मिला। बी. सर्टिफिकेट में बैठने के लिए यह शिविर हमारे विश्वविद्यालय के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। सभी कैडेट्स शिविर के लिए तैयार थे अब हमारी बारी थी अपने उत्कृष्ठ प्रदर्शन से बटालियन यूनिट में अपनी पहचान स्थापित करने की। हम सभी कैडेट्स ने शिविर में आयोजित सभी प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया सबसे रोमांचकारी टग ऑफ वॉर रहा जहा हम सभी में अपने कुशल रणनीति से सामने वाले दल को मैदान में पठखनी दिया।

यह 10 दिवसीय शिविर हमारे लिए कई मायनों में अद्वितीय और शिक्षाप्रद था। हमारा दिन सुबह 4 बजे से शुरू होता था। दिनचर्या में नाश्ता, परेड, शैक्षणिक सत्र और सांस्कृतिक कार्यक्रम शामिल थे, जो रात 10 बजे तक चलते थे। इन गतिविधियों ने हमें अनुशासन, समय प्रबंधन और टीम वर्क की महत्वपूर्णता समझाई। शिविर के शैक्षणिक सत्रों में हमें सेना में इस्तेमाल की जाने वाली विभिन्न रणनीतियों और हथियारों के बारे में जानकारी दी गई। हमें यह सिखाया गया कि विभिन्न परिस्थितियों में कैसे प्रतिक्रिया दी जाए और सेना के जीवन की चुनौतियों का सामना कैसे किया जाए। यह अनुभव न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक रूप से भी हमें मजबूत बनाने में सहायक था। सांस्कृतिक कार्यक्रम शिविर में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के कुल 600 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। इन कार्यक्रमों ने हमें एक दूसरे के साथ मेलजोल बढ़ाने और विभिन्न संस्कृतियों को समझने का अवसर दिया।

धन्यवाद !

– आदित्य विश्वकर्मा, सार्जेंट

CATC संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में सैन्य प्रशिक्षण ग्रहण करने का सौभाग्य मिला। 10 दिनों की अवधि में आर्मी की ट्रेनिंग कैसी होती हैं, परेड ग्राउंड पर कदमताल करना, रायफल को उठाकर गर्व से भर जाना एक सुखद अहसास था। वर्दी की शान, देश सेवा के लिए हर समय तत्पर रहने का भाव एनसीसी में आने के बाद हुआ। बचपन से ही गांव की माटी से देश सेवा के लिए निकले जवानों को देखकर सेना में जाने की इच्छा प्रबल होती थी। गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय में कृषि विषय के साथ एनसीसी ज्वाइन करके मेरे सपने को पंख मिल गया। विश्वविद्यालय में कड़े अभ्यास के दौरान शिविर की छोटी–छोटी तैयारियों से मानसिक एवं शरारिक रूप से हम सभी तैयार हो गए थे। महाराणा प्रताप शिक्षण संस्थान के शोभा यात्रा, 26 जनवरी, 15 अगस्त की परेड से ड्रिल में काफी सुधार हुआ। जिससे शिविर में ड्रिल प्रतियोगिता और अन्य प्रतियोगीताओ के लिए बहुत ही सहायता मिला। शिविर ने जीवन के बहुत सारे अनुभव प्रदान किये। प्रशिक्षण के ये अद्भुत दिन थे, जिससे मुझे मुख्य रूप से अपनी नेतृत्व, गुणवत्ता विकसित करने और अपनी ड्रिल को बेहतर बनाने में मदद मिली। पी आई स्टाफ ने परेड और शस्त्र प्रशिक्षण में बहुत मदद किया। ट्रेसर हंट, टग ऑफ वॉर प्रतियोगिता में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का सौभाग्य मिला। जिससे हमारी दल ने 12 प्रतिद्वंदियों को विविध प्रतियोगिता में पछाड़ते हुए उपविजेता टीम होने का गौरव प्राप्त किया है। इस एतिहासिक विजय में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के सभी कैडेट्स ने जीतने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ श्रम भाव अर्पण किया ।

शिविर में मैने स्वयं में काफी बदलाव महसूस किया है पहली चीज़ जो कोई भी व्यक्ति शिविर में से सीखेगा वह है समय प्रबंधन और समय की पाबंदी वह पहला गुण है जो शिविर में भाग लेने वाले कैडेट्स ग्रहण करते है। पीटी अवधि जिसमें जॉगिंग, जुम्बा कक्षाएं, सुबह के व्यायाम और आत्मरक्षा कक्षाएं भी शामिल थीं, कैडेटों की शारीरिक फिटनेस बनाए रखने के उद्देश्य से एक अनुभव था। मेस में भोजन की उपलब्धता समय पर थी और ऑर्डर किया गया भोजन प्रोटीन से भरपूर और अच्छी गुणवत्ता का था। शिविर में सम्मिलित होने की लिए मैं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव सर, एएनओ डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव, अधिष्ठता डॉ. विमल दूबे जी और अधिष्ठता डॉ. सुनील कुमार सिंह जी के प्रति आभारी हूँ। जिन्होंने हर समय एनसीसी कैडेट्स का मनोबल बढ़ाने का अद्भुत कार्य किया।

धन्यवाद !

– अमित कुमार चौधरी, कैडेट

पौधरोपण कर मनाया गया विश्व पर्यावरण दिवस

लोक भारती न्यूज ब्यूरो

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस परिसर में पौधरोपण कर मनाया गया। गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग की प्राचार्या डॉ. डीएस अजीथा एवं महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने विश्वविद्यालय परिसर में स्थित नंदन वन में फलदार पौधे लगाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर नर्सिंग संकाय की प्राचार्या डॉ. अजीथा ने कहा कि आज पूरा विश्व पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं से जूझ रहा है। पर्यावरण संतुलन और प्रकृति के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि हम अधिक से अधिक पौधे लगाएं। महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने कहा कि पौधों का जीवन हमारे पर्यावरण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। पौधरोपण और वृक्षों का संरक्षण समय की मांग है। राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दूबे ने भी विचार व्यक्त किए। पौधरोपण अभियान में विश्वविद्यालय के उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकान्त, कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे, प्रज्ञा पाण्डेय, डॉ. अमित दुबे, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. गौरीश नारायण, डॉ. संध्या पाठक, डॉ. प्रिया एस. आर. नायर, डॉ. देवी आर. नायर, डॉ. रश्मि पुष्पम, डॉ. एस. यश्मीन, डॉ. नवीन के., डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. गोपी कृष्णा, डॉ. परिक्षित देवनाथ, डॉ. विकास यादव, सृष्टि यदुवंशी, धनन्जय पाण्डेय, डॉ. संदीप श्रीवास्तव आदि की सहभागिता रही।

महायोगी गोरखनाथ विवि में पौधरोपण कर मनाया गया विश्व पर्यावरण दिवस

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस परिसर में पौधरोपण कर मनाया गया। गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग की प्राचार्या डॉ. डीएस अजीथा एवं महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने विश्वविद्यालय परिसर में स्थित नंदन वन में फलदार पौधे लगाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर नर्सिंग संकाय की प्राचार्या डॉ. अजीथा ने कहा कि आज पूरा विश्व पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं से जूझ रहा है। पर्यावरण संतुलन और प्रकृति के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि हम अधिक से अधिक पौधे लगाएं। महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने कहा कि पौधों का जीवन हमारे पर्यावरण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। पौधरोपण और वृक्षों का संरक्षण समय की मांग है। राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दूबे ने भी विचार व्यक्त किए।

पौधरोपण अभियान में विश्वविद्यालय के उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकान्त, कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे, प्रज्ञा पाण्डेय, डॉ. अमित दुबे, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. गौरीश नारायण, डॉ. संध्या पाठक, डॉ. प्रिया एस. आर. नायर, डॉ. देवी आर. नायर, डॉ. रश्मि पुष्पम, डॉ. एस. यश्मीन, डॉ. नवीन के., डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. गोपी कृष्णा, डॉ. परिक्षित देवनाथ, डॉ. विकास यादव, सृष्टि यदुवंशी, धनन्जय पाण्डेय, डॉ. संदीप श्रीवास्तव आदि की सहभागिता रही।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में हुआ पौधरोपण

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय पौधरोपण करते हुए शिक्षक और छात्राएं।

गोरखपुर, अमृत विचार। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय मे विश्व पर्यावरण दिवस परिसर में पौधरोपण कर मनाया गया। गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग की प्राचार्या डॉ. डीएस अजीथा एवं महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने विश्वविद्यालय परिसर में स्थित नंदन वन में फलदार पौधे लगाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर नर्सिंग संकाय की प्राचार्या डॉ. अजीथा ने कहा कि पर्यावरण संतुलन और प्रकृति के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि हम अधिक से अधिक पौधे लगाएं। महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने कहा कि पौधों का जीवन हमारे पर्यावरण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। पौधरोपण और वृक्षों का संरक्षण समय की मांग है। राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दूबे ने भी विचार व्यक्त किए। इस दौरान उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकान्त, कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे, प्रज्ञा पाण्डेय, डॉ. अमित दुबे, डॉ. प्रेरणा अदिति आदि की सहभागिता रही।

महायोगी गोरखनाथ विवि में पौधरोपण कर मनाया विश्व पर्यावरण दिवस

निष्पक्ष प्रतिदिन | गोरखपुर

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस परिसर में पौधरोपण कर मनाया गया। गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग की प्राचार्या डॉ. डीएस अजीथा एवं महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने विश्वविद्यालय परिसर में स्थित नंदन वन में फलदार पौधे लगाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।इस अवसर पर नर्सिंग संकाय की प्राचार्या डॉ. अजीथा ने कहा कि आज पूरा विश्व पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं से जूझ रहा है। पर्यावरण संतुलन और प्रकृति के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि हम अधिक से अधिक पौधे लगाएं। महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने कहा कि पौधों का जीवन हमारे पर्यावरण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। पौधरोपण और वृक्षों का संरक्षण समय की मांग है।

पेड़ धरती पर जीवन के लिए जरूरी: डॉ. राजेश

स्वतंत्र भारत संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस परिसर में पौधरोपण कर मनाया गया। गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग की प्राचार्या डॉ. डीएस अजीथा एवं महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने विश्वविद्यालय परिसर में स्थित नंदन वन में फलदार पौधे लगाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर नर्सिंग संकाय की प्राचार्या डॉ. अजीथा ने कहा कि आज पूरा विश्व पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं से जूझ रहा है। पर्यावरण संतुलन और प्रकृति के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि हम अधिक से अधिक पौधे लगाएं। महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने कहा कि पौधों का जीवन हमारे पर्यावरण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। पौधरोपण और वृक्षों का संरक्षण समय की मांग है। राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दूबे ने भी विचार व्यक्त किए। पौधरोपण अभियान में विश्वविद्यालय के उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकान्त, कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे, प्रज्ञा पाण्डेय, डॉ. अमित दुबे, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. गौरीश नारायण, डॉ. संध्या पाठक, डॉ. प्रिया एस. आर. नायर, डॉ. देवी आर. नायर, डॉ. रश्मि पुष्पम, डॉ. एस. यश्मीन, डॉ. नवीन के., डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. विकास यादव, सृष्टि यदुवंशी, धनन्जय पाण्डेय, डॉ. संदीप श्रीवास्तव आदि की सहभागिता रही।

महायोगी गोरखनाथ विवि में पौधरोपण कर मनाया गया विश्व पर्यावरण दिवस

मखौड़ा संदेश गोरखपुर संवाददाता।

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस परिसर में पौधरोपण कर मनाया गया। गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग की प्राचार्या डॉ. डीएस अजीथा एवं महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने विश्वविद्यालय परिसर में स्थित नंदन वन में फलदार पौधे लगाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर नर्सिंग संकाय की प्राचार्या डॉ. अजीथा ने कहा कि आज पूरा विश्व पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं से जूझ रहा है। पर्यावरण संतुलन और प्रकृति के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि हम अधिक से अधिक पौधे लगाएं। महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने कहा कि पौधों का जीवन हमारे पर्यावरण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। पौधरोपण और वृक्षों का संरक्षण समय की मांग है। राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दूबे ने भी विचार व्यक्त किए। पौधरोपण अभियान में विश्वविद्यालय के उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकान्त, कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे, प्रज्ञा पाण्डेय, डॉ. अमित दुबे, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. गौरीश नारायण, डॉ. संध्या पाठक, डॉ. प्रिया एस. आर. नायर, डॉ. देवी आर. नायर, डॉ. रश्मि पुष्पम, डॉ. एस. यश्मीन, डॉ. नवीन के., डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. गोपी कृष्णा, डॉ. परिक्षित देवनाथ, डॉ. विकास यादव, सृष्टि यदुवंशी, धनन्जय पाण्डेय, डॉ. संदीप श्रीवास्तव आदि की सहभागिता रही।

गोरखनाथ विवि में मनाया योग दिवस

गोरखपुर, कार्यालय संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर योग के विभिन्न आसनों व प्राणायाम का अभ्यास कराया गया।

योगाभ्यास कार्यक्रम का शुभारंभ विवि के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी, महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक कर्नल डॉ. राजेश बहल, आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. मंजूनाथ एनएस ने दीप जलाकर किया। इसके बाद डॉ. मंजूनाथ एनएस और योग प्रशिक्षक चन्द्रजीत यादव ने सभी को विभिन्न प्रकार के योग का अभ्यास कराया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दूबे, फार्मेसी संकाय के अध्यक्ष प्रो. शशिकांत सिंह, उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकांत, डॉ. विकास यादव, डॉ. कीर्ति यादव आदि मौजूद रहे।

महायोगी गोरखनाथ विवि में योग करते कुलपति, शिक्षक व छात्र-छात्राएं।

आरोग्य मंदिर में 800 से अधिक लोगों ने किया योग : प्राकृतिक चिकित्सा के केंद्र आरोग्य मंदिर में योग शिक्षक डॉ. पीयूष पाणी पांडेय ने 800 से अधिक लोगों को योग कराया। आरोग्य मंदिर के निदेशक डॉ. विमल कुमार मोदी ने कहा कि योग हमारी प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है। पूर्व मेयर डॉ. सत्या पांडेय सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर उत्तर प्रदेश-273007

प्रकाशक

राष्ट्रीय सेवा योजना

एवं

राष्ट्रीय कैडेट कोर

coordinator.nss@mgug.ac.in, mguniversitygkp@mgug.ac.in www.mgug.ac.in